Title: Need to set up an All India Sculpture Academy at Khajuraho, Madhya Pradesh.

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : सांस्कृतिक रूप से भारत विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में युगों से संपन्न रहा है। किंतु समय के साथ परम्परागत कलाएं धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक एवम् कलात्मक परम्पराओं का अस्तित्व गम्भीर संकट में है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि सरकार देश की ि वभिन्न कलाओं को न केवल संरक्षण दे और विलुप्त होने से बचाए, बल्कि उनके संवर्द्धन, अनुरक्षण तथा परिमार्जन सुनिश्चित करने के लिए ऐसे शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना करे।

विश्वप्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर, उनकी स्थापत्य कला एवम् पााण मूर्तिकला का एक समृद्ध इतिहास है। रेतीले पत्थरों पर एक हजार वर्ा पूर्व मूर्तिकला का अनुपम तथा अनूठा प्रमाण होते हुए भी चंदेल कालीन कलाओं की यह परम्परा बुंदेलखण्ड क्षेत्र में अपनी अंतिम सांसें गिन रही है। पााण मूर्ति कला के ऐसे ही केन्द्र दक्षिण भारत, उड़ीसा तथा राजस्थान में अनेक स्थानों पर विद्यमान हैं। किंतु इन कलाकारों को तथा मूर्ति कला की परम्परा को धीरे-धीरे नट और विलुप्त होते देखा जा सकता है।

यह सर्वविदित है कि खजुराहो के मंदिरों को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत सम्पदा घोाित किया गया है। अतः सरकार का ध्यानाकर्ाित करते हुए अनुरोध है कि मूर्ति कला की शिक्षा, उसके अनुरक्षण संवर्द्धन तथा इस परम्परा को जीवित बनाए रखने के लिए खजुराहो में अखिल भारतीय पााण मूर्ति कला अकादमी की स्थापना की जाए।